

अध्याय 5

मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश

सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु पश्चात् उसका सम्पूर्ण राज्य जिसमें मध्यप्रदेश भी था। कई छोटे-बड़े राज्यों में बँटा। मालवा में परमार, विन्ध्य में चंदेल और दक्षिण कोशल में त्रिपुरी के कलचुरि इस समय रहे। कुछ समय तक गुर्जर-प्रतिहार वंश व राष्ट्रकूटों का भी मालवा में शासन रहा।

राष्ट्रकूट

मालवा, मध्यप्रदेश के दक्षिणी भाग तथा बुन्देलखण्ड के कुछ क्षेत्र, दक्षिण के राष्ट्रकूट वंश के अधिकार में रहे। राष्ट्रकूट दंतिदुर्ग आठवीं सदी ई. में मालवा पहुँचा। उसने उज्जयिनी में एक उत्सव मनाया और अपनी जीत का दावा किया। उनके ताम्रपत्रों और शिलालेखों से इसकी पुष्टि होती है। शिलालेख छिंदवाड़ा, दमोह, उज्जैन और निमाड़ में मिले हैं। ताम्रपत्र बैतूल और मुल्ताई से प्राप्त हुए हैं।

गुर्जर-प्रतिहार

राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के गुर्जर-प्रतिहार की एक शाखा का, आठवीं सदी के प्रारंभ में अवन्ति पर शासन था। उसका प्रथम शासक नाग भट्ट था और उसकी राजधानी थी उज्जयिनी। उसने अरबों को अवन्ति से बाहर खदेड़ दिया। जिसके कारण उसकी बहुत प्रतिष्ठा बढ़ी। इसी वंश का मिहिर भोज एक प्रतापी राजा माना जाता है। उसने बुन्देलखण्ड पर अधिकार कर लिया। ग्वालियर में उसके तीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

त्रिपुरी के कलचुरि

लगभग आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी के मध्य जबलपुर के निकट त्रिपुरी (तेवर) क्षेत्र में कलचुरि वंश का शासन रहा। इन्होंने त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया। कलचुरि वंश के समय भेड़ाघाट (जबलपुर) में चौसठ योगिनी के मंदिर बनें। कलचुरि वंश के गांगेय देव के सोने चाँदी के सिक्के बटेला, त्रिपुरी (जबलपुर) व सागर में मिले हैं। कलचुरियों का शासन मूर्तिकला में उन्नत था। इस काल में साहित्य तथा कला का प्रचुर विकास हुआ। अनेक शिलालेखों में कलचुरियों की कला, संस्कृति, आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।

मालवा के परमार

दसवीं शताब्दी में मालवा में गुर्जरों और प्रतिहारों की शक्तिहीनता का लाभ उठाते हुए हर्ष सिंह परमार ने एक नए राजवंश की स्थापना की जो परमार राजवंश कहलाया। इस राजवंश में मुंज तथा भोज प्रतापी राजा हुए। मुंज ने गुजरात, कर्नाटक, चोल (तमिल प्रदेश) तथा केरल तक के राजाओं पर विजय प्राप्त की।

राजा भोज (1010 से 1055) की गणना भारत के महान् शासकों में की जाती है। भोज एक महान योद्धा, योग्य शासक, कवि, वास्तुकला ज्ञाता एवं कलाप्रेमी था। वह राजधानी उज्जैन से धार ले गया अर्थात् धार को अपनी राजधानी बनाया और उसे खूब सजाया-संवार। भोज ने कई ग्रंथों की रचना की एवं महत्वपूर्ण स्थल निर्मित किए। उसने भोपाल के निकट भोजसागर (वर्तमान भोपाल झील) व भोजपुर नगर की स्थापना कर वहाँ शिव मंदिर बनवाया। भोज कला और साहित्य का महान संरक्षक था।

परमार राजाओं ने करीब आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक मालवा पर राज्य किया।

विंध्य के चन्देल

कन्नौज के प्रविहार साम्राज्य के विघटन के उपरान्त अनेक स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई। इनमें से एक बुन्देलखण्ड में, चन्देल वंश का था। नवीं सदी के प्रथम चरण में नन्तुक उसका संस्थापक था। उसके पौत्र, जनशक्ति, जो खेजक और खेज्जा भी कहलाता था, के नाम पर चन्देलों का राज्य खेजाकपुक्ति अथवा जिहौती के नाम से विख्यात हुआ। धंग (सन् 954 से 1002) इस वंश का सबसे प्रतापी राजा हुआ। उसके समय चन्देलों का राज्य उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था।

सन् 1202 ई. में कुतुबुद्दीन ने कलिंगर, महोबा आदि पर अधिकार कर लिया। चन्देल वंश का परमार्दिदेव उस समय गद्दी पर था। उसके बाद उसके पुत्र त्रैलोक्य वर्मन (1205 से 1241) ने शत्रु से कलिंगर सहित सब क्षेत्र जीत लिया। सन् 1315 तक चन्देलों के राज्य का उल्लेख मिलता है। खजुराहो के मंदिर, चन्देलों की गौरव गाथा गाते हुए, आज भी दुनियाँ पर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।



खजुराहो का मंदिर

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न-1 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न-1 राजस्थान के गुर्जर, प्रतिहार की शाखा का प्रथम शासकथा।

प्रश्न-2के शासन में मूर्तिकला उन्नत थी।

प्रश्न-3 परमार राजवंश की स्थापनाने की थी।

प्रश्न-2 अतिलघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1 राजा भोज किस वंश के शासक थे व उन्होंने मध्यप्रदेश में क्या-क्या कार्य किए?

प्रश्न-2 राष्ट्रकूट वंश के अधिकार में प्रदेश का कौन-सा भाग था?

प्रश्न-3 धार को मालवा की राजधानी किसके समय बनाया गया?

प्रश्न-4 खजुराहो के मंदिर किसके शासन काल में बने थे?

प्रश्न-5 चौसठ योगिनी के मंदिर किस वंश के द्वारा बनाए गए?